

चितिक am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlwort = चिति, चित्ति *Seicht* P. 6, 3, 127. पञ्च° TS. 5, 6, 10, 2. त्रि° 2, 2, 6. एक° 7. Vgl. चितिका 1.

चितैध (चित von 1. चि + एध) adj. *rogalis*: चितैधमुक्थमिति कृ स्म वा एतदाचक्षते यदेतदाश्चिनम् AIT. Br. 4, 10.

चित्कनकन्थ n. N. pr. einer Stadt (vgl. चिक्काकन्थ) *gaṇa* चिक्का-दि zu P. 6, 2, 125.

चित्कार (चित् onomatop. + 1. कार) m. *Geschrei*: स विषीदति चित्कार-रताडितो गर्दभो यथा HIT. II, 30, v. 1. für चीत्कार. चित्कारशब्द m. dass. WILS. — Vgl. 2. चिति.

चित्कारवत् (vom vorherg.) adj. *von Geschrei begleitet*: वैनायक्यश्चिरे वो वदनविधुतयः पानु चित्कारवत्यः MĀLATIM. (ed. LASS.) 1, 5. चीत्कार° v. 1.

चित् (von 4. चित्) 1) partic. s. u. 4. चित्. — 2) n. a) *das Aufmerken, Bemerk*: यो नस्तिश्चित्तानि जिघांसति *unbemerkt* RV. 7, 39, 8. — b) *das Denken, Vorstellen; Gedanken* RV. 1, 163, 11. आ चित्तं मर्त्येषु धाः 5, 7, 9. ऋत. Br. 3, 2, 4, 16. 12, 7, 4, 9. VS. 20, 9. 18, 2. यस्मिंश्चित्तं सर्वमेतं प्रज्ञानं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु 34, 5. प्राणैश्चित्तं सर्वमेतं प्रज्ञानम् MUND. UP. 3, 1, 9. यश्चित्तस्तेनैष प्राणमायाति PRAÇNOP. 3, 10. चित्तं वाव सं-कल्पाद्भूयः KHAND. UP. 7, 5, 1. मा भूते चित्तमोदशम् *habe nicht solche Gedanken* HARIV. 14674. अनेकचित्तविधातु BHAG. 16, 16. मञ्चितः सततं भव 18, 57. BHAG. P. 3, 7, 8. — c) *Absicht, Vorsatz, Wille* RV. 1, 170, 1. अमै-षा चित्तं प्रवृद्धा विनैश्च 10, 128, 6. VS. 12, 58. मम चित्तमुपायसि AV. 4, 34, 2. 3, 8, 6. चित्तं वीर्त्त्यकृतिं पुरुषस्य च 5, 7, 8. 3, 2, 1. fgg. 11, 8, 27. 19, 4, 2. प्रीणान्ते मनसा प्र चित्तेनैत ब्रह्मणा 3, 6, 8. 23, 6. चित्ताकृतिं च य-द्भुदि TBa. 2, 2, 4, 1. ÇĀṆKH. ÇR. 10, 4, 6. PĀR. GRUH. 1, 8. अहं तावत्स्वामि-नश्चित्तमनुवर्तिष्ये *dem Gebieter zu Willen sein* ÇĀK. CH. 32, 3. — d) *Herz, Gemüth, Geist* NAIKH. 3, 9. AK. 1, 1, 4, 9. H. 1369. देवं स्वचित्तस्थम् ÇVE-*राच*. UP. 6, 5. सन्नानामपि लक्ष्यते विकृतिमञ्चितं भयक्रोधयोः ÇĀK. 38. चि-त्ते निवेश्य 42, v. 1. तत्त्वया चित्ते कर्तव्यम् *beherzigen* PĀNĀT. 140, 17. स्व-स्थचित्ता 128, 19. पिपासाकुलितचित्त 242, 5. भीत° DAÇ. 2, 10. कृष्ट° ad MEGRH. 113. जनस्य चित्तं क्रियते समन्वयम् RĪ. 1, 5. अश्वशेन्द्रियचित्तानाम् HIT. I, 6. नरचित्तप्रमाथिन् R. 1, 9, 4. लघुणाकृष्टचित्ता VID. 149. यत्चित्ता-त्मन् BHAG. 4, 21. शोकात्मयित्तचित्तात्मन् N. 10, 8. ध्येये चित्तस्य स्थिरव-न्धनम् H. 84. पदासौ दुर्वारः प्रसरति मदश्चित्तकरिणाः (mit einem *Elephan-ten* in Parallele gestellt) ÇĀNTIC. 1, 22. *Intelligenz, Vernunft* KAP. 1, 59. JO-*gas*. 1, 37, 2, 54. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 47. 140. 141. COLEBR. Misc. Ess. I, 392. fgg. — e) *personif.*: चित्तं संतानेन (प्रीणाति) TS. 1, 4, 20, 1. — Vgl. अचित्त, इह°, चल°, पूर्व°, प्रायश्चित्त, लघु°, सु°, स्थिर°.

चित्तगर्भा (चित्त + गर्भ) adj. *f. sichtbar schwanger* RV. 5, 44, 5; vgl. oben u. 4. चित् mit वि.

चित्तचारिन् (चित्त + चारि°) adj. *nach Jmdes (gen.) Wunsch verfahren, willfahrend*: पतीनां चित्तचारिणी MBu. 3, 14668.

चित्तजन्मन् (चित्त + जन्°) m. *der im Gemüth Enstandene, Liebe, der Liebesgott* DAÇAK. 106, 13. — Vgl. चित्तभू, चित्तयोनि, मनसिज.

चित्तज्ञ (चित्त + ज्ञ) adj. *herzenkundig*; davon nom. abstr. °ज्ञता f. SĀU. D. 138.

चित्तनाश (चित्त + नाश) m. *das Schwinden des Bewusstseins* DAÇ. 2, 68.

चित्तनिर्वृति (चित्त + नि°) f. *Gemüthsruhe* PĀNĀT. I, 234.

चित्तप्रसन्नता (चित्त + प्र°) f. *Heiterkeit des Gemüths* H. 313.

चित्तप्रसादन (चित्त + प्र°) n. *Gemüthsheiterung* INDR. 2, 31.

चित्तभू (चित्त + भू) m. *Liebe, der Liebesgott* WILS. — Vgl. चित्तजन्मन्.

चित्तमोह (चित्त + मोह) m. *Geistesverwirrung* DAÇ. 2, 67.

चित्तयोनि (चित्त + योनि) m. *Liebe* RAGH. 19, 46. — Vgl. चित्तजन्मन्.

चित्तराग (चित्त + राग) m. *Zuneigung* ÇĀK. CH. 36, 3 (im Prākṛit).

चित्तवत् (von चित्) adj. *mit Vernunft begabt* P. 1, 3, 88. *verständlich, klug* KHAND. UP. 7, 5, 2.

चित्तविकार (चित्त + वि°) m. *Gemüthsveränderung, Gemüthsstörung* MBh. 18, 74.

चित्तविनाशन (चित्त + वि°) adj. *das Bewusstsein vernichtend* *gaṇa* नन्यादि zu P. 3, 1, 134.

चित्तविप्लव (चित्त + वि°) m. *Gemüthsstörung, Wahnsinn* H. 320.

चित्तविध्रम (चित्त + वि°) m. dass. AK. 1, 1, 2, 26. MBh. 18, 74.

चित्तविशेष (चित्त + वि°) m. *das Auseinandergehen der Herzen, Freundschaftsbruch*: तद्विधेन मित्रेण सह चित्तविशेषः PĀNĀT. 223, 17.

चित्तवृत्ति (चित्त + वृत्ति) f. 1) *Gemüthsstimmung, Gefühl*: अहो रागव-द्वचित्तवृत्तिरालिखित इव सर्वतो रङ्गः ÇĀK. 4, 11. आत्माभिप्रायसेमाविते-ष्टजनचित्तवृत्तिः प्रार्थयिता विडम्ब्यते 21, 6. अहं तावत्स्वामिनश्चित्तवृत्ति-मनुवर्तिष्ये 23, 14. मय्येव विस्मरणदारुणाचित्तवृत्ता 119. तथापि मम त-स्योपरि चित्तवृत्तिर्न विकृतिं याति PĀNĀT. 58, 25. — 2) *das Denken, Vor- stellen* VEDĀNTAS. (Allah.) No. 109. 112 u. s. w. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः JO-*gas*. 1, 2.

चित्तसमुन्नति (चित्त + स°) f. *Stolz, Hochmuth* AK. 1, 1, 2, 22.

चित्तस्थित (चित्त + स्थित) *im Herzen befindlich*, m. Bez. eines Sa-*mādh*i VJUTP. 18.

चित्तानुवर्तिन् (चित्त + अनु°) adj. *Jmdes Willen thuend*: पर° VET. 29, 16.

चित्तभाग (चित्त + भाग) m. *volles Bewusstsein* AK. 1, 1, 4, 11.

1. चित्ति (von 4. चित्) f. 1) *das Denken, Verstand, Einsicht*: (इन्द्र धे-हि) चित्तिं दत्तस्य सुभगत्वमस्मे RV. 2, 21, 6. चित्तिरा उपवर्हणे चतुरा अ-भ्यञ्जनम् 10, 85, 7. VS. 12, 31. 17, 78. TBa. 2, 2, 4, 1. ÇĀṆKH. ÇR. 10, 14, 6. यद्वतमतिपेदे चित्ता मनसा कृदा KAUC. 42. pl. *Gedanken; Andacht* (daher bei den Comm. öfters = कर्मन्): क्रत्वा दत्तस्य तर्ह्यो विधर्मणि देवसौ अग्निं जनयत् चित्तिभिः RV. 3, 2, 3. 3, 3. 5, 44, 10. त्वामग्ने मनीषिणस्त्वं हिन्वति चित्तिभिः 8, 44, 19. VĀLAKH. 9, 3. *Absicht, neben* आकृति AV. 5, 6, 10. 24, 1. 6, 41, 1. आकृतीनां चित्तीनां चेतसो विशेषाणां चाधिपतये BULG. P. 5, 18, 18. — 2) *der Verständige*: चित्तिमर्चितं चिनवद्दि विद्वान् RV. 4, 2, 11. चित्तिरूपा दमै विश्वायुः सन्मैव धीराः समार्य चक्रुः 1, 67, 10 (5). — 3) *personif.* die Gemahlin Atharvan's und Mutter des Dadhjanā BHAG. P. 4, 1, 42. — Vgl. अचित्ति, पूर्व°, प्रायश्चित्त.

2. चित्ति f. nach DURG. so v. a. चटचटाशब्दकर्मन् *das Knistern, Zi-
schen* (vgl. चित्कार): सा चित्तिभिर्नि हि च्कार मर्त्यम् RV. 1, 164, 29. In NIB. 2, 9 gibt die ältere Rec. keine Erklärung; nach der jüngeren ist चित्ति = कर्मन्, so auch SĀJ., was auf einer Verwechslung mit 1. चित्ति
beruht.

चित्तिन् (von चित्) adj. *verständlich*: व्यापस्वत्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट AV. 3, 30, 5.